कवि कुलगुरु कालिदास के साहित्य में प्रकृति प्रसाद

– प्रो. डॉ. नरेन्द्र कुमार एल. पण्ड्या

वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये।
जगतः पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ।।
या दुग्धाऽपि न दुग्धेव कविदोग्धृभिरन्वहम्।
हृदि नः सन्निधत्तां सा सूक्तिधेनुः सरस्वती।।

वागर्थ के समान पार्वतीपरमेश्वर और पार्वतीपरमेश्वर के समान महाकवि कालिदास के वागर्थ को वन्दन करता हूँ। चतुर्वर्गफलप्रद, कलावैक्षण्यप्रदायक, कीर्ति और प्रीति को देनेवाले साधुकाव्यों से समलङ्कृत संस्कृतसाहित्यसुधार्णव के उज्ज्वलनीलमणिकल्प रसभावमय कालिदासकविवर के वरेण्य, शरण्य वाङ्मय में अनेकविध वैशिष्ट्य दृग्गोचर होते हैं। काव्यकलानिधान श्रीकालिदासकवि की काव्यकला अनेक प्रकार से सहृदय भावकों को विशाल रसभावामृतसिन्धु में अवगाहन के सुख का आस्वादन करने में कारक–उपकारक होती है। सत्त्वोद्रेक के माध्यम से ब्रह्मानन्दास्वादसहोदर आनन्द में लीन होने का परमसौभाग्य भी कविकला से प्राप्त होता है। (के लीयते अनया इति कला)

लीयते परमानन्दे ययात्मा सा परा कला (कालिदासपरिशीलन, लेखक–प्रो.डॉ. कैलाशनाथ द्विवेदी, प्रका. हंसा प्रकाशन, जयपुर, ई.स.–2014, प्राक्कथन से)

जैसे जगत् के माता–पिता के रूप में पार्वतीपरमेश्वर को कवि ने प्रणाम किया है, तदनुसार हम यह भी भावविमर्श कर सकते हैं कि कविवरकालिदास के वागर्थ पार्वतीपरमेश्वर की तरह काव्यजगत–कविजगत् पालक–पोषक माता–पिता हैं। कवियों में विनयाधान, रक्षण और भरणरूप पालन–पोषण कर्म श्रीकालिदास के वागर्थ से सम्पादित किये जाते हैं। (प्रजानां विनयाधानाद्रक्षणाद्भरणादपि। स पिता पितरस्तासां केवलं जन्महेतवः।। –रघु. १।)

श्रीकालिदास के साहित्य में विविध वागर्थवैशिष्ट्य की तरह प्रकृतिप्रसाद– प्रकृतिप्रसन्नता का आस्वादन प्राप्त होता है। बाह्य और आभ्यन्तर प्रकृति की प्रसन्नता, प्रकृति से प्रसन्नता, प्रकृति में प्रसन्नता आदि रूप में प्रकृतिप्रसाद का दर्शन होता है। वाग् रूप प्रकृति और अर्थरूपप्रकृति की प्रसन्नता भी आस्वादनीय है। कालिदासकविवर के वाङ्मय में प्रकृतिप्रसाद विविध रूप में आस्वादनीय है। कवि कालिदास का प्रकृति के प्रति अनुराग अनुपम है। षट्सर्गात्मक ऋतुसंहार खण्डकाव्य कालिदास का प्रथम काव्य माना जाता है। ग्रीष्मादिवसन्तान्त षड्ऋतुओं के सूक्ष्मेक्षिकापूर्वक किया गया निसर्गवर्णन अद्भुत है। विविध प्राणियों का व्यवहारविशेष सरल और सुन्दर अन्य काव्य उपलब्ध होना दुर्लभ है। ऋतुसंहार में कविकालिदास का विशेष निसर्गप्रेम अभिव्यक्त होता है।

श्रीमान् मेक्डोनल महाशय कहते हैं कि ^^With glowing descriptions of the beauties of nature] in which erotic scenes are interspersed] the poet adoritelyinterweaves the eÛpression of human emotions- Perhaps no other work of Kalidas manifests so strikingly the poet`s deep sympathy with Nature] his keen powers of observation] and his skill in depicting an Indian landscape in Vivid colours- ^^¼History of Sanskrit Literature] page&337½

''अत्राङ्कुरितः कवेर्निसर्गानुरागोऽग्रिमेषु काव्येषु यथाक्रमं पल्लवितः कोरकितःपुष्पितः फलितश्चौवोत्कर्षमावहति। तथा च काव्येऽस्मिन् स्वहृदयगतस्य निसर्गानुरागस्यानावरणं क्रियते कविना।'' (कालिदासो निसर्गश्च, पृष्ठ–३)

ऋतुसाहार में श्रीकालिदासकवि का जो निसर्गप्रेम अंकुरित हुआ है, वह अग्रिम काव्यों में क्रम से

पल्लवित, पुष्पित, फलित हुआ है और उत्कर्ष को प्राप्त हुआ है। कवि के हृदयगत प्रकृतिप्रेम का ऋतुसंहार में अनावरण हुआ है । यह मन्तव्य आचार्य उण्डेमनेशङ्कर भट्ट ने 'कालिदासो निसर्गश्च' ग्रन्थ में अभिव्यक्त किया है। ऋतुसंहार में प्रकृति का हृदयङ्गम, मनोहर, मनोरम चित्रण प्राप्त होता है।

''मृगाः प्रचण्डातपतापिता भृशं तृषामहत्या परिशुष्कतालवः।
वनान्तरे तोयमिति प्रधाविता निरीक्ष्य भिन्नाञ्जनसन्निभं नभः।।'' (ग्रीष्मः–११)
रवेर्मयूखैः अभितापितो भृशं विदह्यमानः पथि तप्तपांसुभिः।
अवाङ्मुखो जिह्मगतिः श्वसन्मुहुः फणी मयूरस्य तले निषीदति।। (ग्रीष्मः–१३)
हुताग्निकल्पैः सवितुर्गभस्तिभिः कलापिनः क्लान्तशरीरचेतसः।
न भोगिनं घ्नन्ति समीपवर्त्तिनं कलापचक्रेषु निवेशिताननम्।। (ग्रीष्मः–१६)

तप और ताप(सन्ताप) वैरवृत्तिशमन करता है। विकारों का शमन तप और ताप से हो सकता है।

श्वसिति विहगवर्गः शीर्णपर्णद्रुमस्थः कपिकुलमुपयाति क्लान्तमद्रेर्निकुञ्जम्।
भ्रमति गवययूथः सर्वतस्तोयमिच्छञ्छरभकुलमजिह्मं प्रोद्धरत्यम्बुकूपात्।। (ग्रीष्मः–२३
बहुतर इव जातः शाल्मलीनां वनेषु स्फुरति कनकगौरं कोटरेषु द्रुमाणाम्।
परिणतदलशाखानुत्पतन्प्रांशुवृक्षान् भ्रमति पवनधूतः सर्वतोऽग्निर्वनान्ते।। (ग्रीष्मः–२६)
गजगवयमृगेन्द्रा वह्निसन्तप्तदेहाः सुहृद इव समेता द्वन्द्वभावं विहाय।
हुतवहपरिखेदादाशु निर्गत्य कक्षद्विपुलपुलिनदेशान्निम्नगां संविशन्ति।। (ग्रीष्मः–२७)

दुःख जोडता है, सुख विभक्त करता है।

कमलवनचिताम्बुः पाटलामोदरम्यः सुखसलिलनिषेकः सेव्यचन्द्रांशुहारः।
व्रजतु तव निदाघः कामिनीभिः समेतो निशिसुललितगीते हर्म्यपृष्ठे सुखेन।। (ग्रीष्मः–२८)

ऋतुसंहार में ग्रीष्म से प्रारम्भ करके वसन्त की ओर ऋतुचक्र की यात्रा के वर्णन में परिणाम में सुखावह प्रकृति का सन्देश है। ''परिणामेऽमृतोपमम्'' गीतावचनानुसार सात्त्विक सुखद ऋतुक्रम ऋतुसंहार में निरूपित किया है। तमस् से रजस्, रजस् से सात्त्विक और सत्त्व से निर्गुणता की ओर गति करना ऊर्ध्वगति आध्यात्मिक पथ में प्रशस्त मानी गई है। कालिदास के काव्यों में भी यह स्थिति प्रकट हो रही है। प्रावृड्वर्णन में–

घनागमः कामिजनप्रियः प्रिये (ऋतु.–२/१)
प्रयान्ति मन्दं बहुधारवर्षिणो बलाहकाः श्रोत्रमनोहरस्वनाः। (ऋतु.–२/३)
प्रवृत्तनृत्यं कुलमद्य बर्हिणाम् (ऋतु.–२/६)
स्त्रियः प्रहृष्टा इव जातविभ्रमाः प्रयान्ति नद्यस्त्वरितं पयोनिधिम् (ऋतु.–२/७)
वनानि वैन्ध्यानि हरन्ति मानसं विभूषितान्युद्गतपल्लवैर्द्रुमैः। (ऋतु.–२/८)
प्रवृत्तनृत्यैः शिखिभिः समाकुलाः समुत्सुकत्वं जनयन्ति भूधराः। (ऋतु.–२/१६)
मुदित इव कदम्बैर्जातपुष्पैः समन्तात् पवनचलितशाखैः शाखिभिर्नृत्यतीव।
हसितमिव विधत्ते सूचिभिः केतकीनां नवसलिलनिषेकाच्छान्ततापो वनान्तः।। (ऋतु.–२/२३)
(कस्यात्यन्तं........मेघ.)
बहुगुणरमणीयः कामिनीचित्तहारी तरुविटपलतानां बान्धवो निर्विकारः।
जलदसमय एष प्राणिनां प्राणभूतो दिशतु तव हितानि प्रायशो वाञ्छितानि ।। (ऋतु.–२/२८)

अनेक गुणों से रमणीय, प्राणियों का प्राणभूत वर्षासमय वाञ्छा पूर्ति करनेवाला हो यह अभिलाषा प्रकट की गई है । ग्रीष्म के ताप की शान्ति का वर्षा में वनप्रदेश भी अनुभव करतें हैं।

शरद्ऋतुः –

''प्राप्ता शरन्नववधूरिव रूपरम्या'' (ऋतु.–३/१)
काशैर्मही शिशिरदीधितिना रजन्यो हंसैर्जलानि सरितां कुमुदैः सरांसि।
सप्तच्छदैः कुसुमभारनतैर्वनान्ताः शुक्लीकृतान्युपवनानि च मालतीभिः ।। (ऋतु.–३/२)

वृद्धिं प्रयात्यनुदिनं प्रमदेव बाला । (ऋतु.—३७)
कुर्वन्ति हंसविरुतैः परितो जनस्य प्रीतिं सरोरुहरजोऽरुजितास्तटिन्यः। (ऋतु.—३ / ८)
हंसानुपैति मदनो मधुरप्रगीतान्, सप्तच्छदानुपगता कुसुमोद्गमश्रीः। (ऋतु.—३ / १३)
शरदि कुमुदसङ्गाद्वायवो वान्ति शीता विगतजलदवृन्दा दिग्विभागाः मनोज्ञाः।
विगतकलुषमम्भः श्यानपङ्का धरित्री विमलकिरणचन्द्रं व्योम ताराविचित्रम्।। (ऋतु.—३ / २२)
इन काव्यपंक्तियों में कविकालिदास द्वारा शरद्ऋतु की निर्मल प्रकृति सुखप्रदरूप से वर्णित की गई है ।
हेमन्तऋतुः —
''प्रफुल्लनीलोत्पलशोभितानि सोन्मादकादम्बविभूषितानि ।
प्रसन्नतोयानि सुशितलानि सरांसि चेतांसि हरन्ति पुंसाम् ।। (ऋतु.—४ / ६)
बहुगुणरमणीयो योषितां चित्तहारी परिणतबहुशालिन्याकुलग्रामसीमा।
सततमतिमनोज्ञः क्रौञ्चमालापरीतः प्रदिशतु हिमयुक्तः ह्येष कालः सुखं वः ।। (ऋतु.—४ / १६)
शिशिरऋतुः —
''प्ररूढशालीक्षुचयावतक्षितिं क्वचित्स्थितक्रौञ्चनिनादराजितम् ।
प्रकामकामं प्रमदाजनप्रियं वरोरु कालं शिशिराह्वयं शृणु ।।'' (ऋतु.—५ / १)
''शिशिरसमय एष श्रेयसे वोऽस्तु नित्यम् ।'' (ऋतु.—५ / १६)
हेमन्त और शिशिर ऋतु का सुखप्रद वर्णन प्राप्त होता है ।
वसन्तऋतुः :—
''द्रुमाः सपुष्पाः सलिलं सपद्मं स्त्रियः सकामाः पवनः सुगन्धिः ।
सुखाः प्रदोषाः दिवसाश्च रम्याः सर्वं प्रिये चारुतरं वसन्ते ।।'' (ऋतु.—६ / २)
वापीजलानां मणिमेखलानां शशाङ्कभासां प्रमदाजनानाम् ।
चूतद्रुमाणां कुसुमान्वितानांददाति सौभाग्यमयं वसन्तः ।। (ऋतु.—६ / ४)
आदीप्तवह्निसदृशैर्मरुतावधूतैः सर्वत्र किंशुकवनैः कुसुमावनम्रैः ।
सद्यो वसन्तसमये हि समाचितेयं रक्तांशुका नववधूरिव भाति भूमिः ।। (ऋतु.—६ / २१)
आकम्पयन् कुसुमिताः सहकारशाखाः विस्तारयन् परभृतस्य वचांसि दिक्षु ।
वायुर्विवाति हृदयानि हरन्नराणां नीहारपातविगमात् सुभगे वसन्ते ।। (ऋतु.—६ / २४)
कुन्दैः सविभ्रमवधूहसितावदातैरुद्द्योतितान्युपवनानि मनोहराणि ।
चित्तं मुनेरपि हरन्ति निवृत्तरागं प्रागेव रागमलिनानि मनांसि यूनाम् ।। (ऋतु.—६ / २५)
नानामनोज्ञकुसुमद्रुमभूषितान्तान् हृष्टान्यपुष्टनिनदाकुलसानुदेशान् ।
शैलेयजालपरिणद्धशिलातलान्तान् दृष्ट्वा नतः क्षितिभृतो मुदमेति सर्वः ।। (ऋतु.—६ / २७)
रक्ताशोकविकल्पिताधरमधुर्मत्तद्विरेफस्वनः
कुन्दापीडविशुद्धदन्तनिकरः प्रोत्फुल्लपद्मानतः ।
चूतामोदसुगन्धिमन्दपवनः शृङ्गारदीक्षागुरुः
कल्पान्तं मदनप्रियो दिशतु वः पुष्पागमो मङ्गलम् ।। (ऋतु.—६ / ३६)

आम्रीमञ्जुलमञ्जरीवरशरः सत् किंशुकं यद्धनुः
ज्या यस्यालिकुलं कलङ्करहितं छत्रं सितांशुः सितम् ।
मत्तेभो मलयानिलः परभृता यद्वन्दिनो लोकजित्
सोऽयं वो वितरीतरीतु वितनुर्भद्रं वसन्तान्वितः।। (ऋतु.—६ / ३८)

वसन्तऋतु प्रसन्नता परिपूर्ण है । कामदेव के प्रिय सखा वसन्तऋतु में सब कुछ चारुतर होता है । यहाँ यह सुप्रतीत होता है कि योगी सुखी है, क्लेशमुक्त है जब कि वियोगी दुःखी और क्लेश का अनुभव करते हैं ।

अध्यात्मविद्या के सन्दर्भ में देखें तो भी यह विदित होता है कि जो योगी है वह सुखी है और अयोगी–वियोगी है उसको क्लेशानुभव स्वाभाविक है ।

मेघदूत में प्रकृतिचित्रण

महाकवि कालिदास मेघदूत में रमणीय प्रकृतिचित्रण करते हैं । यहाँ प्रकृति का सौमनस्य प्रस्तुत हुआ है। मेघ के प्रति वायु की मन्द–मन्द प्रेरणा, चातकों का कलगान से प्रोत्साहन, बलाकाओं का अपने पक्षों से सेवन, मानससरोवर को जानेवाले हंसो का सहप्रवास, रामगिरि का प्रेमपूर्ण सौहार्दभाव, आम्रकूट का आतिथ्य, मयूरों का सौहार्द इत्यादि रमणीय प्रकृति का दर्शन मेघदूत में उपलब्ध होता है ''तीरोपान्तस्तनितसुभगं पास्यसि स्वादु यस्मात् सभ्रूभङ्गं मुखमिव पयो वेत्रवत्याश्चलोर्मि ।।'' (मेघ.पू.–२६) मेघ का उज्जयिनी प्रेम अपूर्व है। ''विद्युद्दामस्फुरितचकितैस्तत्र पौराङ्गनानां लोलापाङ्गैर्यदि न रमसे लोचनैर्वञ्चितोऽसि । (पू.मे.–२६)

निर्विन्ध्या नदी का नायिकात्व वर्णित किया है । उसकी विरहावस्था मेघ के सौभाग्य की अभिव्यञ्जक है। विरहव्यथाजनित कृशता का निवारण मेघ के द्वारा हो यह अपेक्षा व्यक्त की गई है ।

''वेणीभूतप्रतनुसलिलाऽसार्वतातस्य सिन्धुः पाण्डुच्छाया तररुहतरुभ्रंशिभिर्जीणपर्णैः ।

सौभाग्यं ते सुभगविरहावस्थया व्यञ्जयन्ती कार्श्यं येन त्यजति विधिना स त्वयैवोपपाद्यः ।।'' (पू.मे.–३६)

पूर्वमेघ में पैंतालीस श्लोक के अनन्तर मेघ की शृङ्गारवृत्ति की प्रकृति उपशान्त होती वर्णन की है । उसके अनन्तर वह उदात्तभावयुक्त अन्तःशुद्धियुक्त होता है ऐसा वर्णन प्राप्त होता है ।

''हित्वा हालामभिमतरसां रेवतीलोचनाङ्कां
बन्धुप्रीत्या समरविमुखो लाङ्गली याः सिषेवे ।
कृत्वा तासामभिगममपां सौम्य सारस्वतीना–
मन्तः शुद्धस्त्वमपि भविता वर्णमात्रेण कृष्णः ।। (पू.मे.–४६)

मेघ का दावाग्निशमन, त्रिपुरविजयगीत में मृदङ्गध्वनि करना, स्कन्दपूजन, गङ्गाजलपान, शिवचरणन्यास का पूजन इत्यादि में मेघ का अन्तःशुद्ध स्वरूप दृग्गोचर होता है । कविकालिदास ने प्रकृति का सौमनस्यपूर्ण चित्रण सूर्योदय के वर्णनप्रसङ्ग में भी किया है । जैसे– 'तस्मिन् काले नयनसलिलं योषितां खण्डितानां शान्तिं नेयं प्रणयिभिरतो वर्त्म भानोस्त्यजाशु । प्रालेपास्रं कमलवदनात् सोऽपि हर्तुं नलिन्याः प्रत्यावृत्तस्त्वयि कररुधि स्यादनल्पाभ्यसूयः ।।' (पू.मे.–३६) दूसरों के दुःख दूर करने में मदद करनी चाहिए ।

मेघदूत में दिव्यपरिवेश और लौकिक ऐश्वर्य

महान् देव आदि स्मरण, वर्णन, दिव्य अलकापुरी का वर्णन, भगवान् शङ्कर के भाल (मस्तक) पर स्थित चन्द्रिका का अलकापुरी में प्रकाश का निरूपण, रामगिरि, जनकतनया सीता के स्नान से पुण्योदक जलाशय, रामगिरि की मेखलाओं में श्रीराम के चरणचिह्न, गोपवेष विष्णु श्रीकृष्ण का स्मरण करके प्रस्तुत उपमा (बर्हेणेव स्फुरितरुचिना गोपवेषस्य विष्णोः। पू.मे.–१५), पार्वतीपरमेश्वर की आराधना के लिए स्मरण करके कालिदास मेघ को उज्जयिनी हिमालय के इस अद्भुत दिव्य वर्णन में विविध रसों (वीर, शृङ्गार, अद्भुत, भयानक, भाव आदि) का आस्वाद प्राप्त होता है । हिमालय का देवतात्म, नगाधिराज, गिरिराज, शैलाधिप रूप सुन्दररीति से वर्णित किया है । श्रीकालिदासकवि के सङ्गीत का प्रेम और ज्ञान भी हिमालयवर्णन में अभिव्यक्त होता है, जैसे कि – 'यः पूरयन् कीचकरन्ध्रभागान् दरीमुखोत्थेन समीरणेन। उद्गास्यतामिच्छति किन्नराणां तानप्रदायित्वमिवोपगन्तुम् ।।' (कु.–१/८)

श्रीराम रघुवंश समुद्रनिरूपण के त्रयोदश सर्ग में श्रीसीताजी के समक्ष समुद्र का दिव्य भव्य अद्भुत वर्णन करतें हैं । लङ्का और मलयाचल के बीच स्थित रामसेतु से दो भागों में विभक्त रत्नाकर फेनिल अम्बुराशि समुद्र शरत्ऋतु के प्रसन्न आकाश में सेतु के छायापथ से दो भागों में विभक्त, सुन्दर तारकगण मण्डित आकाश की तरह दृश्यमान हो रहा है। ''वैदेहि पश्यामलयाद्विभक्तं मत्सेतुना फेनिलमम्बुराशिम् । छायापथेनेव रत्प्रसन्नमाकाशमाविष्कृतचारुतारम् ।।'' (रघु.–१३/२) समुद्रवर्णन में पौराणिक कथा का सन्दर्भ कवि प्रस्तुत

करते हैं । सगरराजा के अश्वमेध यज्ञ में कपिलाश्रम में लाये गये अश्व को खोजने हेतु सगरपुत्रों ने सागर का परिवर्धन किया था। जैसे कि– ''गुरोर्यियक्षोः कपिलेन मेध्ये रसातलं सङ्क्रमिते तुरङ्गे । तदर्थमुर्वीमवदारयद्भिः पूर्वं किलापं परिवर्धितो नः ।।'' (रघु.–१३/३) अनेक पौराणिकसन्दर्भयुक्त समुद्रवर्णन मनोहर हृदयङ्गम शैली में अभिव्यक्त किया है।

''गर्भं दधत्यर्कमरीचयोऽस्माद्विवृद्धिमत्राश्नुवते वसूनि ।
अबिन्धनं वह्निमसौ बिभर्ति प्रह्लादनं ज्योतिरजन्यनेन ।।
तां तामवस्थां प्रतिपद्यमानं स्थितं दश व्याप्य दिशो महिम्ना ।
विष्णोरिवास्यानवधीरणीयमीदृक्तया रूपमियत्तया वा ।।
नाभिप्ररूढाम्बुरुहासनेन संस्तूयमानः प्रथमेन धात्रा ।
अमुं युगान्तोचितयोगनिद्रः संहृत्य लोकान्पुरुषोऽधिशेते ।।
पक्षच्छिदा गोत्रभिदात्तगन्धाः शरण्यमेनं शतशो महीध्राः ।
नृपा इवोपप्लविनः परेर्ये धर्मोत्तरं मध्यममाश्रयन्ते ।।
रसातलादादिभवेन पुंसा भुवः प्रयुक्तोद्वहनक्रियायाः ।
अस्याच्छमम्भः प्रलयप्रवृद्धं मुहूर्तवक्त्रावरणं बभूव ।। (रघु.–१३/४–८)
प्रवृत्तमात्रेण पयांसि पातुमावर्तवेगाद्भ्रमता घनेन ।
अभाति भूयिष्ठमयं समुद्रः प्रमथ्यमानो गिरिणेव भूयः ।।'' (रघु.–१३/१४)

समुद्रवर्णन में कल्पनावैभव, रसमयता और अलङ्कारसौन्दर्य का समन्वय है ।

''मुखार्पणेषु प्रकृतिप्रगल्भाः स्वयं तरङ्गाधरदानदक्षाः ।
अनन्यसामान्यकलत्रवृत्तिः पिबत्यसौ पाययते च सिन्धूः ।।
ससत्त्वमादाय नदीमुखाम्भः सम्मीलयन्तो विवृताननत्वात् ।
अमी शिरोभिस्तिमयः सरन्ध्रैरुर्ध्वं वितन्वन्ति जलप्रवाहान् ।।
मातङ्गनक्रैः सहसोत्पतद्भिर्भिन्नान् द्विधा पश्य समुद्रफेनान् ।
कपोलसंसर्पितया य एषां व्रजन्ति कर्णक्षणचामरत्वम् ।।
बेलानिलाय प्रसृता भजङ्गा महोर्मिविस्फूर्जथुनिर्विशेषाः ।
सूर्यांशुसम्पर्कसमृद्धरागैर्व्यज्यन्त एते मणिभिः फणस्थैः ।।
तवाधरस्पर्धिषु विद्रुमेषु पर्यस्तमेतत्सहसोर्मिवेगात् ।
ऊर्ध्वाङ्कुरप्रोतमुखं कथञ्चित् क्लेशादपक्रामति शङ्खयूथम् ।। (रघु.–१३/९–१३)
दूरादयश्चक्रनिभस्य तन्वी तमालतालीवनराजिनीला ।
आभाति वेला लवणाम्बुराशेर्धारानिबद्धेव कलङ्करेखा ।।
वेलानिलः केतकरेणुभिस्ते सम्भावयत्याननमायताक्षि ।
मामक्षमं मण्डनकालहानेर्वेचीव बिम्बाधरबद्धतृष्णम् ।।'' (रघु.–१३/१५,१६)

इम श्लोकों में कवि की प्रतिभा का दर्शन होता है। अभिनव कल्पनाओं से युक्त प्राकृतिक वर्णन चमत्कृतिप्रद है।

पञ्चवटीवर्णन दृ पञ्चवटी की दिव्य भव्य अद्भुत रमणीय प्रकृति का चित्रण मनोहर है । पुष्पकविमान से अयोध्या की ओर प्रस्थित सीताजी को पञ्चवटी का दर्शन कराते हैं । पुष्पक त्रिपथग है । ''क्वचित्पथा संचरते सुराणां क्वचिद्घनानां पततां क्वचिच्च । यथाविधो मे मनसोऽभिलाषः प्रवर्तते पश्य तथा विमानम् ।। (रघु.–१३/१९) तपस्वी राक्षसों के त्रास से मुक्त होकर अब पुनः अपने आश्रममण्डल में रहने लगे । परित्राणाय साधूनाम् यह अवतार प्रयोजन संपन्न हुआ ।

यत्र तत्र श्रीकालिदासकवि के काव्यों में शिवस्मरण और शिवचर्या प्राप्त होती है । स्कन्द, रन्तिदेव, विष्णु और परशुराम आदि का स्मरण कवि ने किया है । इस प्रकार दिव्य परिवेश की अनुभूति होती है । लौकिक

ऐश्वर्य का भी वर्णन प्राप्त होता है । जैसे कि उज्जयिनीवर्णन से लौकिक ऐश्वर्य का परिचय मिलता है । शेषैः पुण्यैर्हृतमिव दिवः कान्तिमत् खण्डमेकम् (पू.मे.–३०) । उज्जयिनी की तरह अलकापुरी में लौकिक ऐश्वर्य महान् प्रकर्ष वर्णित किया है । एकः सूतेसकलमबलामण्डनं कल्पवृक्षः (उ.मे.–१२) । मेघ का दक्षिण से उत्तर की ओर प्रस्थान भी दिव्यता की और प्रस्थान का सन्देश देता है । दक्षिणायन से उत्तरायण की ओर जाने का मानो सन्देश है ।

पर्वतादि प्रकृतिनिरूपण

श्रीकालिदासकवि ने कुमारसम्भव में भगवद्विभूतिस्वरूप हिमालय नगाधिराज का दिव्य वर्णन प्रस्तुत किया है । जैसे कि–

''अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा हिमालयो नाम नगाधिराजः ।
पूर्वापरौ तोयनिधी वगाह्य स्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः ।। (कु.–१/१) (अद्‌भुतरसः)
न्यस्ताक्षरा धातुरसेन यत्र भूर्जत्वचः कुञ्जरबिन्दुशोणाः ।
व्रजन्ति विद्याधरसुन्दरीणामनङ्गलेखक्रिययोपयोगम् ।। (कु.–१/७) (शृङ्गारः)
दिवाकराद्रक्षति यो गुहासु लीनं दिवाभीतमिवान्धकारम् ।
क्षुद्रेऽपि नूनं शरणं प्रपन्ने ममत्वमुच्चैः शिरसां सतीव ।। (कु.–१/१२) (करुणः, भयानकः)
लाङ्गूलविक्षेपविसर्पिशोभैरितस्ततश्चन्द्रमरीचिगौरैः ।
यस्यार्थयुक्तं गिरिराजशब्दं कुर्वन्ति बालव्यजनैश्चमर्यः ।। कु.–१/१३) (अद्‌भुतः, वीरः)
भागीरथीनिर्झरसीकराणां वोढा मुहुः कम्पितदेवदारुः ।
यद्वायुरन्विष्टमृगैः किरातैरासेव्यते भिन्नशिखण्डिबर्हः ।। (कु.–१/१५) (अद्‌भुतः, वीरः, बिभत्सः, भयानकः)
सप्तर्षिहस्तावचितावशेषाण्यधो विवस्वान् परिवर्तमानः ।
पद्मानि यस्याग्रसरोरुहाणि प्रबोधयत्यूर्ध्वमुखैर्मयूखैः ।। (कु.–१/१६) (भावः, अद्‌भुतः, वीरः)

सीताविरहजनित वेदनाव्यथित श्रीराम पञ्चवटी में विहार करते हुए मौन बांधनेवाले नूपुर को देखते हैं । यहाँ अद्‌भुत उत्प्रेक्षा से नूपुर की व्यथा और श्रीराम की मनोव्यथा का हृदयस्पर्शी चित्रण किया है । जैसे कि–

''सैषा स्थली यत्र विचिन्वता त्वां भ्रष्टं मया नूपुरमेकमुर्व्याम् ।
अदृश्यत त्वच्चरणारविन्दविश्लेषदुःखादिव बद्धमौनम् ।।'' (रघु.–१३/२३)

प्रकृति के तत्त्व भी सीताविरह में व्यथित श्रीराम को मार्गदर्शन करते हैं ।

''त्वं रक्षसा भीरु यतोऽपनीता तं मार्गमेताः कृपया लता मे ।
अदर्शयन् वक्तुमभक्नुवन्त्यः शाखाभिरावर्जितपल्लवाभिः ।। (रघु.–१३/२४)
मृग्यश्च दर्भाङ्कुरनिर्व्यपेक्षास्तवागतिज्ञं समबोधयन्माम् ।
व्यापारयन्त्यो दिशि दक्षिणस्यामुत्पक्ष्मराजीनि विलोचनानि ।।'' (रघु.–१३/२५)

प्रेममूर्ति श्रीराम की विरहव्यथा उनके सीता के प्रति निर्व्याज स्नेह की द्योतक है । विप्रयोग में अश्रु सारते हुए श्रीराम को प्रकृति के सुखद पदार्थ भी असह्य दुःखद प्रतीत होते हैं ।

''एतद्गिरेर्माल्यवतः पुरस्तादाविर्भवत्यम्बरलेखि शृङ्गम् ।
नवं पयो यत्र दनैर्मया च त्वद्विप्रयोगाश्रु समं विसृष्टम् ।। (सहोक्ति अलङ्कार)
गन्धश्च धाराहतपल्लवानां कादम्बमर्धोद्‌गतकेसरं च ।
स्निग्धाश्च केकाः शिखिनां बभूवुर्यस्मिन्नसह्यानि विना त्वया मे ।। (रघु.–१३/२६,२७) (दीपक अलङ्कार)
अत्रावियुक्तानि रथाङ्गनाम्नामन्योन्यदत्तोत्पलकेसराणि ।
द्वन्द्वानि दूरान्तरवर्तिना ते मया प्रिये सस्पृहमीक्षितानि ।। (रघु.–१३६३१) (विशेषणवैशिष्ट्य–सम्बोधनवैशिष्ट्य)
इमां तटाशोकलतां च तन्वीं स्तनाभिरामस्तबकाभिनम्राम् ।
त्वत्प्राप्तिबुद्ध्या परिरब्धुकामः सौमित्रिणा साश्रमहं निषिद्धः ।।'' (रघु.–१३६३२)

इन पद्यों में विरहव्यथित राम की प्रकृतिदर्शन से मनोदशा अभिव्यक्त होती है । इन श्लोकों में 'सस्पृहमीक्षितानि' वाक्य में सस्पृह शब्द और 'सास्रमहं निषिद्धः' वाक्य में सास्रम् शब्द से विशिष्ट चमत्कृतिपूर्ण अर्थ अभिव्यक्त होते हैं ।

पञ्चवटी के सारसपक्षिगण भी सकुशल प्राप्त सीता का मानों स्वागत करने के लिए आकाश में उड़ते हैं । यहाँ स्वभावोक्ति वर्णन से समुत्थित उत्प्रेक्षा का रमणीय दर्शन है । यथा–

"अमूर्विमानान्तरलम्बिनीनां श्रुत्वा स्वनं काञ्चनकिङ्किणीनाम् ।
प्रत्युद्व्रजन्तीव खमुत्पतन्त्यो गोदावरीसारसपङ्क्तयस्त्वाम् ।।" (रघु.–१३/३३)

पञ्चवटी का दीर्घकाल के बाद श्रीराम ने दर्शन किया है, अतः उसके दर्शन से आह्लाद का अनुभव कर रहे हैं श्रीराम । सीता ने वहाँ स्वयं घटों से जलसेचन करके छोटे–छोटे आम्रतरुओं को संवर्धित किया था। जैसे कि–

"एषा त्वया पेशलमध्ययाऽपि घटाम्बुसंवर्धितबालचूता।
आह्लादयत्युन्मुखकृष्णसारा दृष्टा चिरात्पञ्चवटी मनो मे ।।" (रघु.–१३/३४)

अगस्त्यमुनि का आश्रम, उसके तप का प्रभाव तथा उनके यज्ञ के धूम से रजोगुण से निवृत्ति और सत्त्वगुण के परिणामरूप लघिमा–लाघव (शरीर में हलकापन) की प्राप्ति का मनोहर दृश्य कवि ने उपस्थापित किया है।

"भूभेदमात्रेण पदान्मघोनः प्रभ्रंशयां यो नहुषं चकार ।
तस्याविलाम्भः परिशुद्धिहेतोर्भौमो मुनेः स्थानपरिग्रहोऽयम् ।। (रघु.–१३/३६)
त्रेताग्निधूमाग्रमनिन्द्यकीर्तेस्तस्येदमाक्रान्तविमानमार्गम् ।
घ्रात्वा हविर्गन्धि रजोविमुक्तः समश्नुते मे लघिमानमात्मा ।।" (रघु.–१३/३७)

श्रीराम शरभङ्गमुनि के पावन तपोवन का दर्शन करते हैं तथा उनकी तनुत्याग से अनुपस्थिति में आश्रम के पादप–वृक्ष सुपुत्रों की तरह अतिथियों की सपर्या करते हैं । प्रकृति के द्वारा अतिथियों का आतिथ्य सम्पन्न किया जाता है ।

"अदः शरण्यं शरभङ्गनाम्नस्तपोवनं पोवनमाहिताग्नेः ।
चिराय सन्तर्प्य समिद्भिरग्निं यो मन्त्रपूतां तनुमप्यहौषीत् ।। (रघु.–१३/४५)
छायाविनीताध्वपरश्रमेषु भूयिष्ठसम्भाव्यफलेष्वमीषु ।
तस्यातिथीनामधुना सपर्या स्थिता सुपुत्रेष्विव पादपेषु ।। (रघु.–१३/४६)

पञ्चवटी में अत्रि आश्रम, वहाँ गङ्गानदी–मन्दाकिनी, आश्रमप्रभाव, आश्रम में योगारूढ योगियों जैसे वृक्ष, श्यामवट, गङ्गायमुनासङ्गम, उस सङ्गमस्नान से शरीरत्याग के उपरान्त पुनर्जन्मरूप शरीरबन्धन का अभाव इत्यादि मनोहर सुन्दर प्रकृतिचित्रण श्रीराम के मुखारविन्द से कवि ने प्रकट किया है।

"एषा प्रसन्नस्तिमितप्रवाहा सविद्विदूरान्तरभावतन्वी।
मन्दाकिनी भाति नगोपकण्ठे मुक्तावली कण्ठगतेव भूमेः।। (रघु.–१३/४८)
अनिग्रहत्रासविनीतसत्त्वमपुष्पलिङ्गात् फलबन्धिवृक्षम् ।
वनं तपः साधनमेतदत्रेराविष्कृतोदग्रतरप्रभावम् ।। (रघु.–१३/५०)
अत्राभिषेकाय तपोधनानां सप्तर्षिहस्तोद्धृतहेमपद्माम्।
प्रवर्तयामास किलानसूया त्रिस्रोतसं त्र्यम्बकमौटिमालाम्।। (रघु.–१३/५१)
वीरासनैर्ध्यानजुषामृषीणाममी समध्यासितवेदिमध्याः।
निवातनिष्काम्पतया विभान्ति योगाधिरूढा इव शाखिनोऽपि।। (रघु.–१३/५२)
क्वचिच्च कृष्णोरगभूषणेव भस्माङ्गरागा तनुमीश्वरस्य।
पश्यानवद्याङ्गि विभाति गङ्गा भिन्नप्रवाहा यमुनातरङ्गैः।। (रघु.–१३६५७)
समुद्रपत्न्योर्जलसन्निपाते पूतात्मनामत्र किलाभिषेकात् ।

तत्त्वावबोधेन विनापि भूयस्तनुत्यजां नास्ति शरीरबन्धः ।। (रघु.–१३/५८)

यहाँ गङ्गा–यमुना के सङ्गम का अद्भुत वर्णन किया है। दोनो नदियाँ समुद्रगामिनी होने से समुद्रपत्नीरूप में वर्णन है । 'भिन्नप्रवाहा' पद से दोनों का सङ्गमस्थान में पृथक्प्रवाह सुन्दर दृश्यमान होता है, यह कालिदासकवि की प्रत्यक्षदर्शनपूर्वक किया हुआ वर्णन परिलक्षित होता है। श्रीकालिदासकवि की शिवनिष्ठा का भी अद्भुतदर्शन होता है, गङ्गा–यमुनासङ्गम में उन्हे कृष्णसर्पविभूषित भस्मभूषिताङ्ग गङ्गाधर शङ्कर का दर्शन होता है । "यत्रैव यत्रैव मनो मदीयं तत्रैव तत्रैव तव स्वरूपम् । यत्रैव यत्रैव शिरो मदीयं तत्रैव तत्रैव पदद्वयं ते ।।" भक्त का मन जहाँ जाता है वहाँ उसे अपने इष्ट आराध्य देव का दर्शन होता है।

शकुन्तला की विदाथ वृक्षों से मांगते हुए कण्वमुनि कहते हैं–

भो भोः सन्निहितदेवतास्तपोवनतरवः !

पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं युष्मास्वपीतेषु या, नादत्ते प्रियमण्डनापि भवतां स्नेहेन या पल्लवम् ।

आद्ये वः कुसुमप्रसूतिसमये यस्या भवत्युत्सवः, सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम् ।। (शाकु.–४/८)

इस श्लोक से शकुन्तला का अद्भुत वृक्षप्रेम प्रकट होता है ।

अनुमतगमना शकुन्तला तरुभिरियं वनवासबन्धुभिः ।

परभृतविरुतं कलं यथा प्रतिवचनीकृतमेभिरीदृशम् ।। (शाकु.–४/६)

शाकुन्तल में पतिगृह जाती हुई शकुन्तला के पवन और पथ दोनों मंगलकारी और सुखप्रद है । कण्व के ये आशीर्वाद मार्गों की सुखद प्राकृतिक स्थिति कितनी उत्कृष्ट है, इसका वर्णन इस तरह किया गया है । जैसे कि–

रम्यान्तरः कमलिनीहरितैः सरोभिः, छायाद्रुमौर्नियमितार्कमयूखतापः ।

भूयात्कुशेशपरजोमृदुरेणुरस्याः, शान्तानुकूलपवनश्च शिवश्च पन्थाः ।। (शाकु.–४/१०)

पतिगृहप्रस्थान करती हुई शकुन्तला के विरह में तपोवन पूरा व्यथित है। शकुन्तला की जैसी ही तपोवन की विरहकातर दशा है । उद्गलितदर्भकवला मृग्यः परित्यक्तनर्तना मयूराः। अपसृतपाण्डुपत्रा मुञ्चन्त्यश्रूणीव वनलताः ।। (शाकु.–४/११) पतिगृह जाती हुई शकुन्तला के लिए पुष्प मांगने के लिए गये ऋषिकुमारों को वनस्पतियों से विविध अलङ्करण प्राप्त होते हैं । शकुन्तला का वृक्षों के प्रति और वृक्षों का शकुन्तला के प्रति अनुपम स्नेह है ।

"क्षौमं केनचिदिन्दुपाण्डु तरुणा माङ्गल्यमाविष्कृतं, निष्ठ्यूतश्चरणोपभोगसुलभो लाक्षारसः केनचित् ।

अन्येभ्यो वनदेवताकरतलैरापर्वभागोत्थितैर्रत्नान्याभरणानि तत्किसलयोद्भेदप्रतिद्वन्द्विभिः।।" (शाकु.–४/४)

अष्टमूर्ति परमेश्वर शिव– प्रकृति में शिवदर्शनः–

श्रीकविकालिदास ने अभिज्ञानशाकुन्तल का मङ्गलाचरण भगवान शिव की अष्टमूर्तिओं के निरूपण से किया है । ये आठ मूर्तियाँ प्रकृति स्वरूप हैं। जल, अग्नि, यजमान, सूर्य, चन्द्र, आकाश, पृथिवी और वायु ये शिव की अष्टमूर्तियों के सहित शिव प्रसन्न होकर अभिज्ञानशाकुन्तल के प्रेक्षक–वाचकों की रक्षा करें, कल्याण करें यह प्रार्थना की गई है। एतन्निमित्त से समस्त विश्व की रक्षा अष्टमूर्ति सदाशिव करें यह प्रार्थना है । "या सृष्टिः स्रष्टुराद्या वहतिविधिहुतम्....." (शाकु.–१/१) । यहाँ प्रपन्न और प्रसन्न दो पाठ हैं । अष्टमूर्तियुत शिव प्रसन्न हों और उनकी अष्टमूर्तिरूप प्रकृति भी प्रसन्न हो यह भाव है । अभिज्ञानशाकुन्तल के भरतवाक्य में उपसंहार में भी "प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः" (अभि.शाकु.–७/३५) से प्रकृति (प्रजारूप प्रकृति और निसर्गरूप प्रकृति) के हित में राजा की प्रवृत्ति की कामना की गई है । आद्यन्त में उपक्रम उपसंहार में प्रकृति की प्रसन्नता का अनुसन्धान यहाँ प्राप्त होता है । कविकालिदास की आद्यकृति भी प्रकृतिपरक है । मेघदूत में प्रकृति की गोद में पालन–पोषण प्राप्त करती है और कण्व मुनि के वचनानुसार "शान्ते करिष्यसि पदं

पुनराश्रमेऽस्मिन्" (शाकु.–४/) उसका अन्तिम जीवन भी प्रकृति की गोद में आश्रम में व्यतीत हुआ होगा । कुमारसम्भव और रघुवंश में भी प्रचुरमात्रा में प्रकृति निरूपण प्राप्त होता है ।

कविकुलगुरु के वाङ्मय में बाह्य–आभ्यन्तर, स्थूल, मूर्त–अमूर्त प्रकृतिनिरुपण दिव्य अद्भुत अनुपम है । इन काव्यों के अवलम्बन से प्रकृति और परमेश्वर के अनुपम रसमय स्वरूप में लीनता प्राप्त करके अद्वितीय सुख का आस्वाद उपलब्ध हो सकता है ।

उपसंहार–

इस तरह श्रीकालिदासकवि के साहित्त्य के अवलोकन से उस यत्र तत्र बहुत्र प्राकृतिक वर्णन तथा प्रकृतिका प्रसादपूर्ण वर्णन उपलब्ध होता है । प्रसन्न प्रकृति के साथ शारीरिक, मानसिक तथा वाचिक सान्निध्य हमारे स्वभावभूत प्रकृतिमें भी प्रसन्नता और सात्त्विकता का आविर्भाव करता है । हम अपनी प्रकृति को प्रसन्न करने के लिए भी कालिदास के साहित्त्य का अवलम्बन कर सकतें हैं ।

सन्दर्भग्रन्थः –

१) कालिदासग्रन्थावली, संपा. रेवाप्रसाद द्विवेदी, प्रका. काशीहिन्दुविश्वविद्यालय, वाराणसी, ई.स. १९७६

२) कालिदास साहित्य में जीवनमूल्य, सं. डॉ.(श्रीमती) कमलेश माथुर, प्रका. ईस्टर्न बुकलिंकर्स, दिल्ली, ई.स. २०१५

३) महाकविकालीदासः, सं. डॉ. रामजी उपाध्याय, प्रका. चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, ई.स. १९९३

४) कालिदाससूक्तिमञ्जूषा, सं. के. ए. पाध्ये, संजय प्रकाशन, नई दिल्ली, ई.स. २००६

५) कालिदासो निसर्गश्च, सं. आचार्यः उण्डेमने शङ्कर भट्टः, प्रका. राष्ट्रीयसंस्कृतविद्यापीठम्, तिरुपतिः, ई.स. २००३

– (प्राचार्य)

श्री सोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय

संचालित कॉलेज, वेरावल, गुजरात

"अपनी जिद पर कायम रहें, आप हारी हुई बाजी भी जीत सकते हैं"

शुद्धता सबसे बड़ा उपहार है स्वास्थ्य सबसे बड़ा धन है

अपना® नमकीन

हमारे शास्त्रों से लेकर विज्ञान तक ने यह माना है कि **'शुद्ध मूँगफली का तेल'** हमारे शरीर के लिए **सेहतमंद** है, आजकल शहर में कई स्थानों पर विभिन्न तरह के तेल का उपयोग नमकीन बनाने में किया जा रहा है जो कि हमारे शरीर के लिए अत्यंत हानिकारक है। **सावधान रहें अपनी सेहत का ध्यान रखें।** 'अपना नमकीन' अपनी सैकड़ों तरह की नमकीन वैरायटी के साथ ही सभी तरह के फरियाली नमकीन बनाने में भी उपयोग करता है केवल **'शुद्ध मूँगफली का तेल'** और हमारे **स्वयं के प्लांट में पिसा हुआ बेसन** और 'अपना' के खुद के **मसाला प्लांट में पिसे हुए मसालों का शुद्ध मिश्रण**। हम कृत संकल्पित हैं आपकी अच्छी सेहत के प्रति।

APNA Besan Plant

'अपना नमकीन' में हम हमारे स्वयं के बेसन प्लांट में पिसे हुए बेसन का उपयोग करते हैं।

APNA Masala Plant

'अपना नमकीन' में हम हमारे स्वयं के मसाला प्लांट में तैयार शुद्ध मसालों का मिश्रण उपयोग में लाते हैं।

A M ▷ 94253-14429

INDI Pizza | Fruit in Natural | Apna's eggless bakes-N-cakes | APNA's Dryfruit | Apna's Chocomate Delicious Chocolates | Matka King Matka Kulfi | ROOF TOP RESTAURANT

एक स्वाद जो संबंध जोड़े | SAVE A GIRL, CHANGE THE WORLD | अपना भारत स्वच्छ भारत | fssai | 100% VEG. | SafeFOOD | Live Kitchen | We use only RO Water | An ISO 22000:2005 Certified Organisation

अपना® SWEETS

म.प्र. का सबसे बड़ा फूड ब्रांड

Indore | Ujjain | Dewas | Rau-Mhow
NH-47 Indore-Ahmedabad, Machal

www.apnasweets.com